आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:31/12/2022; Published:31/01/2023

नारी

डॉ. सुमन शर्मा

मूल: डॉ. गीता गीडा (गुजराती)

जीवन के रंगमंच पर महानायिका नारी,
ज्यों खिलखिलाते रंगबिरंगे फूलों की क्यारी!

संसार के सभी रंगों आयामों से न्यारी,
प्रेम दया भावनाओं की मूरत सन्नारी।

फूलों की महक,कोमलता में बसने वाली,
वज्र सम कठोरता की स्वामिनी नारी।

रूप तेज से दीपित अंबिका स्वरूप नारी,
रौद्र स्वरूप में रणचंडी कालिका नारी।

त्याग बलिदान के शृंगार से सुशोभित नारी,
स्व' से सृजन करती शक्ति स्वरूपा नारी।

अस्तित्व विलीन कर अमरत्व प्राप्त करती नारी
जीवन के रंगमंच पर महानायिका नारी।

****